पुराणों के स्वरूप एवं प्रमुख पुराणों का उल्लेख करें।

अमरकोश में पुराण के लक्षण तथा विषय-वस्तु के संबंध में यह उल्लेख मिलता है - 'सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च। वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥'

पुराणों में पाँच विषयों का प्रतिपादन होता है - ① सर्ग - विश्व की सृष्टि की प्रक्रिया ② प्रतिसर्ग - प्रलय तथा पुनः सृष्टि का वर्णन ③ वंश - देवताओं और ऋषियों के वंश का वर्णन ④ मन्वन्तर - प्रत्येक मनु का काल और उसकी प्रमुख घटनाओं का निरूपण ⑤ वंशानुचरित - सूर्यवंश और चंद्रवंश में उत्पन्न राजाओं का जीवन-चरित। 'विष्णुपुराण' एकमात्र ऐसा पुराण है जिसमें ये लक्षण घटित होते हैं। कालक्रम में पुराणों में अनेक विषयों का संकलन होने लगा और मूल पुराण लक्षण अभिभूत हो गया। अन्य पुराणों में ये पाँच लक्षण आंशिक रूप से ही मिलते हैं और कहीं-कहीं वो भी नहीं।

विषय-वस्तु की दृष्टि से पुराणों में मुख्य रूप से जो विषय प्राप्य हैं - ① धार्मिक सामग्री - अवतारवाद, मूर्तिपूजा और भक्ति का अत्यधिक प्रचार मिलता है। ② दार्शनिक सामग्री - जगत् के जन्म, स्थिति और प्रलय को क्रमशः ब्रह्मा, विष्णु, महेश से सम्बद्ध करके दार्शनिक विषयों को धर्म से जोड़ा गया है।

③ ऐतिहासिक सामग्री - नन्द, मौर्य, शुंग, आन्ध्र तथा गुप्त वंश के राजाओं की सूची भी पुराणों में दी गयी है, जिसपर आधुनिक इतिहासकारों को अत्यधिक विश्वास है।

④ भौगोलिक सामग्री - भारत की भौगोलिक एकता का निरूपण करके राजनीतिक दृष्टि से पृथक्-पृथक् राज्यों में विभक्त देश का सांस्कृतिक समन्वय करने में पुराणों

Scanned with CamScanner

का प्रभूत योगदान है।

(5) आचार-विषयक सामग्री – पुराणों में दान, दया, अतिथि-सेवा, सर्वधर्म समभाव, उदार दृष्टि, व्रत के प्रति निष्ठा इत्यादि मानवीय गुणों का प्रकाशन कथाओं के द्वारा किया गया है।

(6) ज्ञान-विज्ञान की सामग्री – कुछ पुराणों में व्याकरण, काव्यशास्त्र, ज्योतिष, आयुर्वेद, शरीर-विज्ञान आदि शास्त्रीय तथा वैज्ञानिक विषयों का संकलन है।

हिन्दू-धर्म का विश्वकोश ही पुराणों का प्रतिपाद्य है।

पुराणों की संख्या तथा विभाजन –

पुराणों का विकास महापुराण और उपपुराण दो रूपों में विकसित हुआ है। महापुराण उपपुराण से प्राचीन हैं। उनकी संख्या अठारह है। इस विषय में एक श्लोक मिलता है – 'मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम्। अनापलिंगकूस्कानि पुराणानि पृथक् – पृथक्॥

मद्वयं — मत्स्य तथा मार्कण्डेय पुराण।
भद्वयं – भविष्य तथा भागवत पुराण।
ब्रत्रयं – ब्रह्म, ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त पुराण।
वचतुष्टयम् – विष्णु, वायु, वराह तथा वामन पुराण।

अ – अग्नि पुराण।
ना – नारद पुराण।
प – पद्मपुराण।
लिंग – लिंग पुराण, गरुड़ पुराण।
कू – कूर्म पुराण।
स्क – स्कन्द पुराण।

पुराणों का विभाजन वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्राचीन और परवर्ती के रूप में होता है

B. A. Ist Yr + III Yr.
Uma Pathak
Deptt. of Skt.

Scanned with CamScanner